

आरती मर्यादा पुरुषोत्तम राम की

आरती कीजै श्रीरघुवर की,
सत चित आनन्द शिव सुन्दर की ॥

दशरथ तनय कौशिला नंदन,
सुर मुनि रक्षक दैत्य निकंदन ।

अनुगत भक्त-भक्त उर चंदन ।
मर्यादा पुरुषोत्तम वर की ।

निर्गुन सगुण अस्म रूपनिधि,
सकल लोक वंदित विभिन्न विधि ।

हरण शोक भय दायक सब सिधि,
मायारहित दिव्य नर वर की ।

जानकिपति सुराधिपति जगपति,
अखिल लोक पालक त्रिलोक गति ।

विश्ववन्द्य अनवद्य अमित मति,
एकमात्र गति सचराचर की ।

शरणागत वत्सल ब्रतधारी,
भक्त कल्पतरु वर असुरारी ।

नाम लेत जग पावनकारी,
वानर सखा दीन दुख हर की ।

विवरण

श्री रघुवर मर्यादा पुरुषोत्तम राम की आरती कीजिए जो सच्चिदानन्द माने जाते हैं तथा शिव के समान सुन्दर हैं। जो राजा दशरथ के पुत्र हैं एवं माता कौशल्या के नंदन हैं, जो देवताओं एवं मुनियों के रक्षक हैं और राक्षसों का संहार करने वाले भी हैं। ये अपने आश्रित भक्तों के भक्त हैं तथा उनके हृदय के चन्दन भी हैं, ऐसे मर्यादा पुरुषोत्तम राम की आरती कीजिए।

ये निर्गुण भी हैं अर्थात् गुणों से रहित भी हैं और सगुण भी है अर्थात् सर्वगुणसम्पन्न भी हैं। इनका स्य अलंकारों से रहित सागर के समान हैं। सारे संसार के लोग विविध स्य से इनकी वन्दना करते हैं। ये श्री राम जो शोक एवं भय को हरने वाले हैं तथा सभी सिद्धियों को देने वाले हैं। सभी माया-मोह से रहित मनुष्य के समान दिखने वाले वर श्री रीम जी की आरती है।

ये श्री राम जी सीता जी के पति हैं सभी देवताओं के मालिक हैं एवं पूरे संसार के भी मालिक हैं तथा सम्पूर्ण विश्व का पालन करने वाले हैं, तीनों लोकों को गति-मुक्ति प्रदान करने वाले भी यहीं श्री राम जी हैं। ये सम्पूर्ण विश्व के वन्द्य एवं अपरिमित मति प्रदान करने वाले हैं, चर एवं अचर जगत को गति प्रदान करने वाले यही एक मात्र श्री राम जी हैं, इनकी शरण में जो भी आता है, उन्हें अपने प्रेम एवं स्नेह से सराबोर होने का व्रत देते हैं।

ये अपने भक्तों के लिए कल्पतरु (काल्पनिक वृक्ष) के समान हैं एवं असुरों का नाश करने वाले हैं। इनका नाम लेते ही जग के सारे कार्य पवित्र हो जाते हैं, ये श्री राम जी वानरों के सखा हैं तथा दुखियों का दुःख हरण करने वाले हैं।